: पंचम अध्याय :

आलोच्य उपन्यासों में चित्रित नारी समस्याएँ

: पंचम अध्याय :

"आलोच्य उपन्यासों में चित्रित नारी समस्याएँ"

5.1 नारी समस्याएँ

5.1.1 सामाजिक समस्याएँ ।

(अ) बालविवाह ।

(ब) दहेज प्रथा ।

(क) पुनर्विवाह ।

(ड) अनमेल विवाह ।

(ई) अंतर्जातीय विवाह ।

5.1.2 विवाहोत्तर प्रेम समस्या ।

(अ) पति का विवाह पूर्व आकर्षण ।

(ब) पत्नी का विवाह पूर्व आकर्षण ।

5.1.3 काम तथा यौन संबंधी समस्या ।

(अ) यौनाकर्षण समस्या ।

(ब) यौनात्याचार की समस्या ।

5.1.4 पारिवारिक समस्या ।

(अ) विधवा समस्या ।

(ब) नारी ही नारी की दुश्मन ।

5.1.5 मनोवैज्ञानिक समस्या ।

(अ) मानसिक कुंठा ।

5.1.6 नारी शिक्षा की समस्या ।

5.1.7 नारी मुक्ति की समस्या ।

5.2 धार्मिक समस्याएँ ।

(अ) सती प्रथा ।

(ब) अंधविश्वास ।

5.3 आर्थिक समस्या ।

निष्कर्ष

राघव जी ने उपन्यासों में नारी चित्रण के साथ उनके जीवन संघर्ष और समस्याओं का सूक्ष्म निरीक्षण किया है और अपने उपन्यासों में 'आदर्शोन्मुख यथार्थ' को नारी समस्याओं के चित्रण में विशेष रुप से प्रयुक्त किया है ।

5.1 नारी समस्याएँ :-

डॉ.रांगेय राघव जी ने अपने उपन्यासों में नारी समस्याओं का यथार्थ चित्रण किया हैं। कहा जाता है कि, नारी-ही-नारी की वेदना एवं दर्द को समझती है, लेकिन पुरुष होकर भी राघव जी ने नारी के दुख-दर्द, समस्याओं का सूक्ष्म निरीक्षण अपने उपन्यासों में चित्रित किया है । राघव जी ने नारी समस्या के विविध पक्षों को अपने उपन्यासों में चित्रित किया है । उनका हल कभी प्रस्तुत किया है, तो कभी पाठकों पर छोड़ा है। राघव जी ने नारी जाति के शोषण और हृदय की पीड़ा की ओर सहानुभूति और आत्मीय भाव से देखा है और उसका यथार्थ चित्रण अपने उपन्यासों में कर समस्याओं की ओर समाज का ध्यान आकर्षित किया है। राघव जी के 'राई और पर्वत', 'पतझ़र', और कल्पना में नारी जीवन की विविध उल्लेखनीय समस्याएँ निम्नलिखित हैं.......

5.1.1 सामाजिक समस्याएँ :-

नारी समाज का एक अंग है। अतः नारी समस्या एक सामाजिक समस्या बन जाती है। नारी जीवन विविध घटनाओं, प्रसंगों से भरा होता है। परिणामतः नारी को भी पुरुष की तरह अनेक समस्याओं से गुजरना पड़ता है जैसे - 'राई और पर्वत', 'पतझ़र' तथा 'कल्पना' उपन्यासों में नारी की वैवाहिक समस्या, विवाहोत्तर प्रेमसमस्या, काम तथा यौन समस्या, पारिवारिक समस्या आदि समस्याएँ प्रदर्शित हुई हैं।

इनमें से विवाह विषयक समस्याएँ निम्न प्रकार से –

(अ) बाल विवाह :-

भारतीय समाज में आज भी कहीं-कहीं बाल विवाह की प्रथा प्रचलित है। बचपन में ही बच्चों का विवाह करने के कारण वे मानसिक तथा शारीरिक रुप से असमर्थ होते हैं। 'राई और पवर्त' में विद्या को बाल विवाह समस्या से गुजरना पड़ता है। विद्या का विवाह बारह साल की आयु में ही कर दिया जाता है। उसको कम उम्र में ही घर की जिम्मेदारियों को सहना पड़ता है। सुसंस्कारित होने के कारण विद्या ससुराल की मान-मर्यादाओं को जल्दी ही सीख लेती है। घर के कामों में हाथ बँटाती है। परंतु विवाह के चार साल बाद ही उसे विधवा होना पड़ता है। कम उम्र में ही पति का साया निकल जाने के कारण समाज के साथ-साथ, ससुरालवालों की याने अपने परिवारवालों की भी दृष्टि परिवर्तित हो जाती है। विद्या को एक दासी की नजर से देखा जाता है। परिणामतः विद्या ससुरालवालों की इस कुदृष्टि का विरोध कर मायके चली जाती है।

(ब) दहेज प्रथा :-

दहेज, विवाह संस्था के लिए अभिशाप माना जाता है। दहेज प्रथा का प्रचलन पुरातनकाल से चला आ रहा है। विवाह के बाद भी दहेज के लेन-देन के कारण ही 'राई और पर्वत' में विद्या को तंग किया जाता है। विद्या के पिता ने शादी में लेन-देन में कुछ कसर नहीं छोड़ी थी। फिर भी विद्या को, विधवा होने के पश्चात् लेन-देन की बातों को लेकर ताने कसे जाते हैं। विद्या की सास के तानों का जवाब दते हुए विद्या के पिता कहते हैं, ''यों तो सरधा थी सो हमने किया समधिन। कमी तो न आने दी। बरातियों तक ने कहा था कि गिरिधर पंडित ने कसर न रहने

दी। यों भगवान ने तुम्हारा हाथ ऊपर रखा है, सो कह लो, पर बेकस के आँसू में गौ का सराप होता है।"[1] विद्या को वैधव्य के साथ-साथ दहेज प्रथा लेन-देन के तानों को भी सहना पड़ता है। दहेज तथा लेन-देन को लेकर कसे गए तानों से त्रस्त होकर कितनी नारियाँ अपना जीवन समाप्त कर देती है।

(क) <u>पुनर्विवाह</u> :-

भारतीय संस्कृति में पत्नी की मृत्यु के बाद पति को दूसरा, तिसरा विवाह करने की सुविधा है परंतु पति की मृत्यु के बाद पत्नी दूसरा विवाह नहीं कर सकती और अगर करना है तो समाज पुनर्विवाह को आसानी से इजाजत नहीं देता ।

'राई और पर्वत' में पति की मृत्यु के बाद विद्या के पिता उसका पुनर्विवाह करना चाहते हैं । विद्या की माँ, फूलवती और हरदेव, विद्या के पुनर्विवाह की चर्चा करते हैं, लेकिन विद्या, पुनर्विवाह के लिए इन्कार कर देती है। विद्या के चाचा समाज-सुधारक थे, अगर वे जिंदा होते तो विद्या का पुनर्विवाह जरुर करते। किंतु विद्या पुराने विचारोंवाली और भाग्य पर विश्वास रखनेवाली होने के कारण वह पुनर्विवाह नहीं करना चाहती। विद्या का कथन है, "भाग में होता दादा, तो यहीं सुहाग क्यों उजड़ता? अब तो जित्ते दिन बाकी हैं, यों ही गुजर जाएँगे। पुरनविवाह तो सरधा की बात है। हौंस बाकी हो तब न?"[2] विद्या पुनर्विवाह न कर अपने विधवा जीवन को ही निभाना चाहती है।

वह अपना विधवा जीवन स्वाभिमान से बिताना चाहती है, किंतु माँ विद्या के इस विचार का विरोध कर उसे पुनर्विवाह के लिए उकसाती रहती है। लेकिन विद्या अपने तम पर अटल रहती है, वह पुनर्विवाह का कड़ा विरोध करती है।

फूलवती, विद्या का पुनर्विवाह अपने हित के लिए करना चाहती थी। किंतु विद्या पुनर्विवाह के लिए तैयार नहीं होती।

राघव जी ने पुनर्विवाह को विधवा समस्या के हल रुप में बताया है। लेकिन ज्यादातर स्त्रियाँ पुरानी परंपराओं के कारण पुनर्विवाह को स्वीकार नहीं करती। पुनर्विवाह से विधवा नारी का एक नया जीवन शुरु हो जाता है। उसके जीवन में तथा समाज में एक नया अस्तित्व निर्माण हो जाता है, जिससे विधवा को समाज में समानाधिकार प्राप्त हो सकता है।

(ड) अनमेल विवाह :-

'राई और पर्वत' में फूलवती अनमेल विवाह की शिकार हो गयी है। फूलवती का विवाह एक अधेड़ वृद्ध गिरिधर पंडित से हो जाता है। जिसके कारण फूलवती की मजबूरी, आर्थिक असहायता, चाचा का पैसों का लालच आदि हैं । पिता की असमय मृत्यु के बाद चाचा ने पैसों के लालच में आकर फूलवती का विवाह एक वृद्ध से किया था। अतः फूलवती अपने बचपन के साथी हरदेव से अलग हो जाती है।

फूलवती के विवाह के बाद उस पर देवर द्वारा बलात्कार किया जाता है। परिणामतः वह विद्या को जन्म देती है। पति के वृद्धत्व के कारण फूलवती को वैवाहिक सुखों से वंचित रहना पड़ता है। अतः वह देवर के हाथों बलात्कार का विरोध नहीं करती। हरदेव से मिलने के बाद वह देवर को जहर देकर मार डालती है, और हरदेव से अवैध संबंध रखती है। जब विद्या द्वारा फूलवती के प्रेम-संबंध का राज खुल जाता है तो फूलवती अपमानित अवस्था में अपने सबंधों को पति के

सामने खोलती है, कबुल करती है, जैसे – "तुम बुड्ढे हो, इसलिए मैंने बचपन का साथी पाकर जवानी के मद में पाप किया और आज तक तुम्हारी और गाँव की आँखों में धूल झोंकती रही........।"[3] अंत में मानसिक अंतर्द्वंद्व के कारण वह अपने पति के साथ चिता पर सती जाती है। आज भी फूलवती की तरह अनेक नारियाँ अनमेल विवाह के कारण दुष्कृत्य करती हुई अपने चरित्र को नष्ट करती हैं।

(इ) अंतर्जातीय विवाह :-

आधुनिक युग में उच्च शिक्षा के कारण हर युवक-युवती अपने भविष्य के संबंध में सोचते हुए, अपनी इच्छा-आकांक्षाओं के अनुरुप अपना जीवन साथी चुनना चाहते हैं। लेकिन समाज ऐसे विवाह को इजाजत नहीं देता।

'पतझर' में राघव जी ने समाज में स्थित जातिभेद तथा वर्णव्यवस्था के कारण मोहिनी को जन्म-जन्मांतर से पीड़ित दिखाया है। मोहिनी, एक शिक्षित, कायस्थ युवती है, जो एक ब्राह्मण जाति के पढ़े-लिखे जगन्नाथ से प्रेम करती है। किंतु समाज और अपने माता-पिता की मान-मर्यादा का पालन करने के कारण वे दोनों एक-दूसरे को जीवनसाथी के रुप में नहीं पा सकते। परिणामतः मनोरुग्ण बन जाते हैं। इन दो प्रेमियों के परिवारवाले जातिभेद माननेवालों में से होने के कारण वे अपने बच्चों के सुख के बीच जाति की दीवार खड़ी करना चाहते हैं। मोहिनी अपने संस्कारित मन और भावुकता के कारण एक तरफ से तो प्रेमी को जीवनसाथी के रुप में पाना चाहती है, तो दूसरी तरफ से माता-पिता की इच्छा आकांक्षा का विरोध नहीं करना चाहती। अतः मोहिनी का मन अंतर्द्वंद्व से घिरा रहता है।

मोहिनी को ही पचास साल पूर्व जन्म के आधार पर जातिभेद के

कारण अपने प्रेमी से बिछड़ना पड़ा था। पचास साल पूर्व मोहिनी 'रमिया' नामक भंगन थी और वह झाड़ू-पोंछा लगाने का कार्य करती थी। रमिया, एक शिक्षित युवक को चाहती थी, जो विलायत जानेवाला है। लेकिन रमिया जातिभेद के कारण तथा नौकरानी पेशे के कारण अपने प्रेमी को पा नहीं सकती जैसे - "अरे तुम पगली हो और तुम यह नहीं सोचती कि वह एक ब्राहमण है और तुम एक मेहतरानी।"[4] रमिया को जाति बंधन के कारण अपने प्रेमी से बिछड़ना पड़ता है।

राघव जी ने डॉ.सक्सेना नामक पात्र के जरिए इस समस्या का कड़ा विरोध किया है। मोहिनी और जगन्नाथ के पिता के मन में स्थित जातिभेद को मिटाकर दो प्रेमियों का अंत में मिलन करा देते हैं। राघव जी ने जातिभेद की शृंखला को तोड़कर एकता की ओर निर्देश किया है।

5.1.2 <u>विवाहोत्तर प्रेम समस्या</u> :-

मनुष्य जीवन में विवाह के बाद पति-पत्नी दोनों को, अंत तक एक-दूसरे का साथ निभाना पड़ता है। किंतु कभी-कभी जीवन में कुछ हादसे निर्माण हो जाते हैं जिससे दाम्पत्य जीवन दुखमय बन जाता है। अगर विवाह के बाद पति किसी दूसरी स्त्री या पत्नी किसी दूसरे पुरुष से संबंध जोड़ लेती है, तो भी नारी को कष्ट सहना पड़ता है। ऐसे दाम्पत्य जीवन का अंत भी दुखमय होता है विवाहपूर्व प्रेम को विवाह के पश्चात् भी बनाए रखने के कारण नारी जीवन दुखद बनता है।

(अ) <u>पति का विवाहपूर्व आकर्षण</u> :-

'कल्पना' में नीला का पति अपनी विवाह पूर्व प्रेमिका के साथ विवाह के पश्चात् भी प्रेमसंबंध रखता है। डॉक्टर, नीला को अपनी पत्नी नहीं, एक पराई

औरत मानता है। वह नीला से पत्नी जैसा व्यवहार करने में व्यभिचार मानता है। अपनी प्रेमिका को घर ले आता है, घुमाने ले जाता है, सिनेमा दिखाता है। डॉक्टर की स्वच्छंद प्रेम वृत्ति के कारण विवाह के बाद भी वह सामाजिक बंधन का पालन नहीं करना चाहता। डॉक्टर का कथन है, "मैं कोई पाप नहीं करता । निर्मला भी पाप नहीं करती। स्त्री-पुरुष प्रेम करने को स्वतंत्र हैं।.......हम क्यों अपनी इच्छाओं का दमन करें? तुम मेरे लिए एक अनजान स्त्री हो। तुमसे मैं प्रेम नहीं कर सकता।"[5] डॉक्टर ने मजबूरी के कारण नीला से विवाह किया था। परंतु डॉक्टर की मजबूरी ने नीला का जीवन बरबाद किया था। नीला अपने पति के प्रेम का विरोध नहीं करती। उन दोनों को मिलाने के लिए सहयोग भी देना चाहती है। परिणामतः डॉक्टर अपनी प्रेमिका के साथ एक होटल में जहर खाकर आत्महत्या करता है।

(ब) <u>पत्नी का विवाहपूर्व आकर्षण</u> :-

'कल्पना' में निर्मला विवाह पूर्व एक डॉक्टर को चाहती थी। परंतु डॉक्टर की मजबूरी के कारण निर्मला डॉक्टर से विवाह नहीं कर पाती। अतः निर्मला का विवाह एक व्यस्त वकील से हो जाता है। विवाह के पश्चात् भी वह डॉक्टर को भूल नहीं सकती और आधी रात में भी न घबराते हुए डॉक्टर से मिलने आती है। डॉक्टर भी विवाहित होने के कारण निर्मला का मन आशंकित है कि कहीं अपना प्रेमी पत्नी के कारण मुझे भूल न जाए। निर्मला अपने प्रेम को डॉक्टर की पत्नी के सामने व्यक्त करने में भी नहीं हिचकिचाती। परिणामतः डॉक्टर की पत्नी, निर्मला के साहस को देख उन दोनों को अपनी इच्छा एवं मुरादों को पूरा करने की इजाजत देती है। लेकिन नीला के वक्तव्य तथा त्याग से निर्मला अपने-आपको अपमानित तथा लज्जित महसूस करती है और डॉक्टर के साथ जहर खाकर आत्महत्या करती है।

निर्मला के पति, एक व्यस्त वकील होने के कारण उन्होंने कभी निर्मला का विरोध नहीं किया और निर्मला ने भी अपने पति की व्यस्तता का फायदा उठाते तथा धोखा देते हुए अंत में अपना जीवन नष्ट किया था।

'राई और पर्वत' में फूलवती विवाह के बाद भी पूर्व प्रेमी हरदेव के साथ अनैतिक संबंध स्थापित करती हैं। अपने पति से झूठ बोलते हुए हरदेव का परिचय 'मुँहबोला भाई' के नाम से करा देती है। यहाँ तक की अपनी बेटी को भी इसी राह पर लाना चाहती है, लेकिन बेटी नहीं मानती तो उसे बदनाम करती है। किंतु अपने प्रेम-संबंधों के कारण फूलवती का अंत दुखद होता है। वह गाँव में पतिव्रता से कहीं पतिता रुप में चर्चित होने के डर से मृत पति के साथ सती के रुप में न चाहते हुए जिंदा जल जाती है। अतः फूलवती को न चाहते हुए भी अपना जीवन समाप्त करना पड़ता है।

5.1.3 काम तथा यौन संबंधी समस्या :-

समाज में स्त्री-पुरुष के बीच काम-वृत्ति धीरे-धीरे बढ़ती जा रही है। इसी कारण कुछ स्त्री-पुरुष एक-दूसरे की ओर आकर्षित हो जाते हैं, और प्रेम-बंधन में बँध जाते हैं, यहीं काम तथा यौनाकर्षण समस्या बन जाती है जैसे - 'राई और पर्वत', 'पतझर' और 'कल्पना' में इससे निर्मित समस्याएँ दिखाई देती हैं।

(आ) यौनाकर्षण की समस्या :-

यौनाकर्षण की समस्या स्त्री-पुरुष के परस्पर आकर्षण तथा कामभावना से जुड़ी हुई दिखाई देती है। 'राई और पर्वत' में यौनाकर्षण तथा अपनी वासना तुष्टि के लिए फूलवती देवर के अत्याचार तथा बलात्कार को छुपाए रखती है। हरदेव के

मिलते ही देवर को जहर देकर मार डालती है। और अपनी वासना तुष्टि हरदेव से करती रहती है। फूलवती अपने और हरदेव के संबंध को स्पष्ट करती हुई कहती है, "तुम बुड्ढे हो, इसलिए मैंने बचपन का साथी पाकर जवानी के मद में पाप किया और आज तक तुम्हारी और गांव की आँखों में धूल झोंकती रही....।"[6] फूलवती अपने संबंध को छुपाए रखने के लिए अपनी बेटी को भी अनैतिक संबंधों के लिए उकसाती है। परिणामतः बेटी ही अपनी माँ के अपवित्र चरित्र पर लांछन लगाती है, उसे अपमानित करती है।

'पतझर' उपन्यास में मोहिनी परस्पर आकर्षण के कारण प्रेम समस्या की शिकार हो जाती है। परिणामतः मानसिक रुप से विकृत हो जाती है। समाज तथा परिवार की मान-मर्यादा का पालन करने की खातिर वह अपने प्रेमी जगन्नाथ से बिछड़ जाती है और वियोगावस्था के कारण अपना अस्तित्व भूल जाती है। मोहिनी और जगन्नाथ यौनाकर्षण के कारण एक-दूसरे को पाने के लिए तरसते हैं, लेकिन संस्कारित मन और जातिभेद की दीवार को तोड़ नहीं सकते। परिणाम स्वरुप दोनों मनोरुग्ण बनते हैं। डॉक्टर दोनों को अपने कर्तव्य, अस्तित्व तथा स्त्री-पुरुष के परस्पर आकर्षण के संबंध में कुछ सुझाव देते हैं, जिससे मोहिनी और जगन्नाथ को अपनी भूल का एहसास होता है।

मोहिनी के पूर्व जन्म के आधार पर प्रावर्णा और मंदार, सुकेशी और मकर रमिया और उसका प्रेमी भी परस्पर आकर्षण के कारण प्रेम समस्या की शिकार हो जाते हैं और जातिभेद, वर्णव्यवस्था, समाज बंधन के कारण बिछड़ जाते हैं। मोहिनी का तीन हजार साल पूर्व का जन्म 'प्रतीची' नामक गंधर्वी का था। प्रतीची भी विश्वावसु पर मोहित हो जाती है। विश्वावसु से, अपनी यौन तृप्ति या वासना-तृप्ति

पाने के लिए उसके पास आती है। जैसे – "आज मैं तुम्हारे ही लिए आ रही थी विश्वावसु। काम ने मुझे पीड़ित कर दिया है। इसलिए मैं तुम्हारी खोज में इधर आ रही थी।"[7] विश्वावसु से गांधर्व विवाह कर प्रतीची अपनी इच्छा, वासना तुष्टि से तृप्त होकर अपने गांधर्व जाति के नियमानुसार विश्वावसु को छोड़कर चली जाती है।

'कल्पना' में निर्मला यौनाकर्षण के कारण प्रेम-समस्या की शिकार होती है। समाज के बंधन तथा डॉक्टर की मजबूरी के कारण अपने प्रेम में असफलता पाती है। परंतु विवाह के बाद भी निर्मला डॉक्टर से अलग नहीं रह सकती। डॉक्टर को मिलने रात में अकेली ही आती है। निर्मला बिना झिझक डॉक्टर के साथ प्यार भरे व्यवहार करती है जिससे नीला, उन दोनों के खुले व्यवहार को उनकी अतृप्त आकांक्षा को पूर्ण करने की इजाजत देती है, जैसे – "बहुत दूर से आई हो। सो जाओ। मेरे बिस्तर पर लेट जाओ।......जितने दिन का यह प्रेम है, उसका आवेश पूरा हो जाने दो।"[8] किंतु निर्मला, नीला के स्वभाव गुण, त्याग, उदारता के सामने लज्जित हो जाती है और जहर खाकर आत्महत्या करती है। लेखक ने समस्या के साथ दुष्परिणामों को भी चित्रित किया है जैसे मोहिनी का मनोरुग्ण बन जाना, निर्मला की आत्महत्या करना आदि का वर्णन कर समाज के सामने यौनाकर्षण समस्या के दुष्परिणाम को प्रस्तुत किया है साथ ही सामाजिक कुरीतियों पर प्रहार किया है।

(ब) यौनात्याचार की समस्या :-

समाज में कभी-कभी पुरुष की मानसिक विकृति वासना, प्रतिशोध के कारण नारी को यौनात्याचार की समस्या का सामना करना पड़ता है। समाज में नारी को अबला माना जाता है परिणामत: नारी भी अपने-आपको असहाय मानती है और

पुरुष के अत्याचार की शिकार बन जाती है। 'राई और पर्वत' में फूलवती का एक वृद्ध के साथ विवाह हो जाता है। फूलवती अपने नसीब को कोसती है। ससुराल आते ही देवर द्वारा उस पर बलात्कार होता है। रामभरोसे, विद्या को समाज-सुधारक चाचा की कहानी सुनाते हुए कहता है, "फूलो ब्याह के बाद आई। उसे लगता था कि अपने मरद से छुड़ाकर वह पराए मरद को बेच दी गई थी। पर होश आ गया था। आग के फेरे लगे और उसने मन-ही-मन तया किया, जो होना था सो हो गया। अब तो मेरा पति है वही जो आग के फेरे देकर लिवा लाया है। और इसी के लिए जीना होगा। बूढ़ा है तो, अंधा है तो। पर पति तो पति है। और तब आया था तेरा चाचा घर। जवान। सो रही थी एक राम फूलो। गिरिधर बाहर गए थे और तेरे उसी धरमातमा चाचा ने तेरी माँ फूलो को जबरन....।"[9]

फूलवती पर इस घटना का विक्षिप्त परिणाम हो जाता है। वह मानसिक रुप से विकृत बन जाती है। कारण एक तो अपने प्रेमी से बिछड़ गई थी, दूसरा वृद्ध पति मिला था और तीसरा वह देवर द्वारा बलात्कार की शिकर बनी। इन्हीं घटनाओं से त्रस्त होकर वह प्रतिशोध का मौका पाकर अपने देवर को जहर देकर मार डालती है। अपने पति को धोखे में रखकर हरदेव से प्रेम-संबंध रखती है। उन्हीं प्रेम-संबंधों के लिए वह अपनी बेटी को बदनाम करना चाहती है।

विद्या पर भी यौनात्याचार का प्रसंग आता है। फूलवती, रामभरोसे को घर बुला लेती है और अपनी बेटी को छेड़ने के लिए प्रेरित करती है। रामभरोसे विद्या के ही घर में विद्या के साथ छेड़छाड़ करता है। उसे छूने की कोशिश करता है, "रामभरासे ने उसका बाया हाथ पकड़ लिया था। विद्या की देह पसीने से भीग गई थी। उसे लग रहा था, उसकी आँखों के सामने अंधेरा छा गया है।......विद्या को

लग रहा था सब कुछ चक्कर खा रहा है।.......रामभरोसे का श्वास उसकी कनपट्टी पर लगा।''[10] तभी विद्या के हाथ दरात लगा और वह रामभरोसे को दरात से मार देती है।

हरदेव भी फूलवती से बिछड़ जाने के कारण प्रतिशोध की आग में जलता हुआ विद्या को बरबाद करने आता है जैसे – "तूने मां को मार डाला, तो मैं तुझे बदनाम को ऐसा कर दूँगा कि तू अपने–आप और अपने परमात्मा के सामने भी सिर न उठा सके......।''[11] और हरदेव, विद्या पर झपट जाता है। विद्या उसका विरोध करती है, उसे नोच डालती है। किंतु हरदेव के आगे विद्या की शक्ति कम पड़ती है। तभी विद्या के हाथ दरात लगते ही वह हरदेव पर वार पर वार करती जाती है। विद्या के हाथ से खून हो जाता है, जिससे विद्या को खूनी नाम का एक और कलंक सहना पड़ता है। सारा गांव विद्या के खिलाफ गवाही देता है। परिणामतः विद्या को कैदी जीवन भुगतना पड़ता है। विद्या अपने जीवन को व्यर्थ समझकर फाँसी की सजा चाहती है।

'पतझर' में चार हजार साल पूर्व मोहिनी, प्रावर्णा नामक एक पिशाच जाति की युवती थी। नीलुख नामक एक बलवान पुरुष प्रावर्णा का अपहरण करता है और उसे एक अंधकारमय गुफा में बंद करवाता है। नीलुख की शक्ति के आगे प्रावर्णा पराजित हो जाती है। नीलुख, प्रावर्णा के नारीत्व को नष्ट कर देता है और बलपूर्वक उसे अपना लेता है। प्रावर्णा बस् अपने पूर्व प्रेमी की यादों को, उसके गीतों–संगीत को याद कर अपना जीवन बिता देती है।

5.1.4 पारिवारिक समस्या :-

समाज परिवार से बनता है और परिवार माता-पिता, पुत्र-पुत्री, भाई-बहन आदि से बनता है। पारिवारिक समस्या परिवार के सदस्यों में मतभेद, अविचार, अशिक्षा, अर्थाभाव के कारण निर्माण होती हैं। जिससे रिश्तों में बिखराव आ जाता है, परिवार में अशांति फैल जाती है इसी तरह पारिवारिक विघटन हो जाता है। ऐसी ही समस्याएँ राघव जी के उपन्यासों में दिखाई देती हैं।

(अ) विधवा समस्या :-

नारी जीवन में विधवा का जीवन भी दहेज प्रथा जैसा ही एक अभिशाप माना जाता है। समाज का विधवा के प्रति दृष्टिकोण पूर्णतः बदल जाता है। जो विधवा होती है, उसे समाज के अधिकतर लोग वासना की नजर से देखता हैं और स्त्री-वर्ग विधवा को तिरस्कृत एवं घृणित नजर से देखते है। जब तक पति का साथ है तब तक समाज में विवाहिता का स्थान ऊँचा होता है, मान-सम्मान मिलता है, पति के गुजर जाने के बाद समाज तो क्या घरवाले भी विधवा से घृणा करने लगते हैं।

'राई और पर्वत' की विद्या को भी अपने विधवा जीवन में अनेक कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। विद्या सोलह साल में ही विधवा हो जाती है। विधवा होने के बाद ससुरालवाले विद्या को मानसिक रुप से त्रस्त करने लगते हैं। उसे विधवा नाम से बार-बार टोका जाता है। ससुर, जेठ उसे वासना भरी नजर से छेड़ते हैं। पचास वर्षीय ससुर का कथन है, "अरी तुझे क्या यहाँ कुछ दुख है, जो जाती है? कानूनन हम चाहे तो तुझे जाने से रोक सकते हैं। पड़ी रह यही। वहाँ बूढ़ा मरा

तो कौन देखगा तुझे?"[12] जिससे विद्या का मन घृणा से भर जाता है। और विद्या ससुराल के अपवित्र वातावरण से तंग आकर मायके चली आती है।

"लड़की जब पति के साथ निकलती है ससुराल के लिए, तब मानो वह जीवन-समुद्र पर निकल पड़ती है तूफानों और आंधियों को झेलने के लिए, उन्हें जीत लाने के लिए। लेकिन जब वह अपने बाप के साथ मायके की शरण में लौटती है तब लगता है, जैसे चुचाती नाव पर किसी ने कूदकर समुद्र में डूब जाना ही बेहतर समझ लिया हो।"[13] विद्या को मायके में आने के बाद ऐसा ही जीवन जीना पड़ता है। विद्या का विधवा होना तथा मायके लौट आना गांववालों के लिए एक चर्चा का विषय बन जाता है। कोई विद्या के चरित्र को बुरा कहता है, तो कोई अच्छा कहता है। समाज है तो कोई कुछ भी कह सकता है।

विधवा को समाज में सम्मानित स्थान तो मिलता ही नहीं, अपितु उसे अशुभ माना जाता है। विद्या को भी ऐसी घटनाओं को सहना पड़ता है। विद्या की जेठानी विद्या के गहनों को अशुभ मानती है। वह विद्या के गहनों को गलवाकर फिर से ढलवाकर स्वयं पहनना चाहती है। जब विद्या की माँ चिता पर चढ़ जाती है, तो विद्या को बहुत बुरा लगता है। वह माँ के पास जाने के लिए छटपटाती है। परंतु गाँव की औरतें उसे रास्ते से हटा देती हैं, जैसे - "पीछे हटा दो विद्या को। विधवा, कुलटा कहीं सामने पड़ जाए सती की आँखों के, भसम न हो जाए......।"[14] विद्या, माँ को देख भी नहीं पाती। विद्या अपने चरित्र को पवित्र ही रखना चाहती है, जबकि विद्या की माँ, फूलवती का मत है कि विधवा का कोई अस्तित्व ही नहीं होता, परंतु विद्या विविध प्रकार की सीमाओं और संघर्षों के बीच शुद्धता, सरलता, निर्भिकता एवं आदर्श को प्रस्तुत करती है।

रामभरोसे, विद्या को चाहता है, लेकिन विद्या उसके प्रेम का तिरस्कार करती है। विद्या के मतानुसार विधवा किसीसे प्रेम तथा विवाह नहीं कर सकती। विद्या का कथन है, "इसको मुझसे प्यार है? ऐसा नीच। एक रांड़ से प्यार करेगा? यह पाप नहीं तो और था ही क्या? क्यों करता है वह प्यार?"[15] और विद्या रामभरोसे के विवाह-प्रस्ताव को ठुकरा देती है। विद्या पर पुराने संस्कार होने के कारण वह यह मानती है कि विधवा का प्रेम करना या विवाह करना पाप है। नारी के लिए सबसे बड़ा दुख वैधव्य का है और विधवा का दयनीय जीवन मध्यवर्गीय समाज में अत्यंत करुण होता है। राघव जी ने विधवा समस्या पर पुनर्विवाह यही हल बताया है, जिससे वह अपना जीवन सँवार सकती है।

(ब) नारी ही नारी की दुश्मन :-

नारी जीवन की समस्या में कभी नारी ही नारी की दुश्मन बन जाती है। "असल में नारी ही नारी की दुश्मन है। उच्च तथा निम्न-वर्गीय नारियाँ भी इसके लिए अपवाद नहीं हैं, परंतु मध्यवर्गीय परिवार की नारियों में यह प्रवृत्ति कुछ ज्यादा ही है।"[16]

'राई और पर्वत' में फूलवती ही विद्या की दुश्मन बन जाती है, अर्थात् माँ ही अपने स्वार्थ के लिए, अपनी वासना-तृप्ति के लिए अपनी बेटी की ही दुश्मन बन जाती है। फूलवती, हरदेव से अवैध संबंध रखती है और अपने संबंधों के बीच का काटा अपनी बेटी को मानकर उसे हटाने के लिए नई-नई चालें चलती है। वह बेटी का पुनर्विवाह करना चाहती है, जिसका विद्या द्वारा विरोध करने पर वह प्रसाद में भंग मिलाकर विद्या को खिलाती है और रामभरोसे के हाथ से रबड़ी चखवाकर

अपनी बेटी को बदनाम करती है। रामभरोसे को घर बुला लाती है। फूलवती के कहने पर ही रामभरोसे विद्या को छेड़ता है। इन घृणास्पद व्यवहार से त्रस्त होकर विद्या भी अपनी माँ का तिरस्कार करने लगती है। अपनी माँ के हरदेव के साथ चल रहे प्रेम-संबंधों का विरोध कर पिता को बताने का प्रयास करती है। इससे बात-बात पर दोनों में झगड़े होते रहते हैं, मतभेद होते रहते हैं। विद्या का धीरे-धीरे अपनी माँ के प्रति विद्रोही रुप प्रकट होता है, जिससे फूलवती डरती है। अपनी बेटी की जान लेने पर उतर आती है, उसकी लाश को चील-कौओं को खिलाने की धमकी देती है। फूलवती अपने पतिव्रता रुप को पति के सामने तथा समाज में कायम रखना चाहती है। परंतु विद्या भी अपनी माँ के सामने ही उसके अपवित्र रुप का राज खोलती है। पिता के सामने अपनी माँ को अपमानित करती है। अपमानित फूलवती समाज में पतिव्रता की प्रतिमा बनाए रखने के लिए सती जाना चाहती है। वह विद्या पर संतप्त होते हुए कहती है, -"ओ पापी। तू हरी-भरी गिरस्ती उजाड़ गया रे जमदूत। भगवान तुझे देखेगा। मेरी बेटी मेरे आगे आई। ओ पंड़ित। भोले पंड़ित। तुम सुरग जाओगे। मैं तो नरक जाऊँगी।"[17] घृणा से फूलवती की आँखें बड़ी-बड़ी हो जाती है, मानो अपमान से वह व्याकुल हो गई हो।

विद्या भी अपने मृत पिता से बोलती हुई माँ के अपवित्र तन-मन को सती जाने के लिए उकसाती है, प्रेरित करती है। जैसे, "सुनते हो दादा, अम्मा जा रही है। वे ऐसी पवित्तर है कि चिता की आग भी उन्हें फूल सी लगेगी।.....तुम सती हो। बहुत बड़ी हो माँ। तुमने अपनी कोख से मुझ पापिन को जनम दिया है। मेरे दादा तुम पर कितना भरोसा करते थे।"[18] और फूलवती अपने झूठे सम्मान के साथ अपनी बेटी को दुश्मन समझती हुई सती जाती है।

'कल्पना' में नीला और निर्मला जैसे एक-दूसरे के सुख के बीच दीवार सी बन जाती हैं। नीला का पति, डॉक्टर अपनी मजबूरी के कारण निर्मला से विवाह न करते हुए नीला के साथ विवाह करता है। और नीला की वजह से न निर्मला सुखी रह सकती है और न निर्मला की वजह से नीला सुख से रह पाती हैं। नीला और निर्मला, शिक्षित होने के कारण अपने मन के विद्रोह को दोनों शांति तथा समझदारी से प्रकट करती हैं। जैसे - नीला, त्याग और समर्पण के भावावेश में निर्मला को अपने पति के साथ वासना तुष्टि को पूरा करने की इजाजत देती है। नीला का कथन है, "जितने दिन का यह प्रेम है, उसका आवेश पूरा हो जाने दो, अन्यथा इसका जो भी अंश मेरा है वह भी मेरे हाथ नहीं आ पाएगा।"[19] कहते हुए नीला बाहर चली जाती है, जिससे निर्मला लज्जित हो जाती है।

'कल्पना' में ही 'अवदातिका' और महाकवि भास से महासती सीता की कहानी स्पष्ट होती है। सीता को अपने पति के साथ वन जाना पड़ता है। इसके पीछे भी एक नारी का ही हाथ था। राम की सौतेली माता 'कैकेयी' अपने पुत्र 'भरत' के सुख की कामना करते हुए राम के लिए चौदह वर्ष वनवास की माँग अपने पति से विवाहशुल्क के रुप में करती है। इसी कारण कैकेयी ही सीता के दुखी जीवन का कारण बनती है।

'कल्पना' में ही बकुलावलिका की सहायत से विदुषक, राजा और मालविका का मिलन कराना चाहता है। वह बकुलावलिका से राजा के प्रेम की बात कहता है, ताकि वह मालविका तक पहुँच सके। परंतु बकुलावलिका चिंतित हो जाती है कि अगर महारानी देवी को मालूम हो गया तो क्या होगा? क्यों कि महारानी चाहती थी कि राजा की नजर मालविका पर न पड़े। बकुलावलिका कहती है, "अब

यह क्या कोई आसान काम है। मालविका मेरी सखी है, पर कहीं देवी को पता चल गया तो मेरी कितनी बड़ी मुसीबत आ जाएगी? राजा का क्या है। रानी उनसे रुठेंगी, तो अपना सुहाग लेंगी? पर मैं अगर पकड़ी गई तो।........महाकवि मिलेंगे तो वे मुझसे पूछेंगे कि तैने कैसे उनका मिलन कराया। सच सारा बोझ मुझ पर डाल दिया है।''[20] मालविका और महारानी में एक स्नेह भरा संबंध था, परंतु मालविका के सौंदर्य और कलानिपुणताने राजा के मन में प्रेम-आकर्षण का स्थान निर्माण किया था। अब जैसे राजा की दो रानियाँ थी अब मालविका के रुप में तीसरा प्रेम निर्माण हुआ था। जिसके लिए सहायता बकुलावलिका करती है। महारानी और इरावती के साथ ही राजा मालविका को पाना चाहता है, अगर मालविका और राजा अग्निमित्र के प्रेम की बात महारानी को मालूम हो जाएगी तो वह राजा पर रुठ जाएगी और मालविका को दुश्मन मान लेगी, क्योंकि महारानी ने ही अनाथ मालविका को नाट्य और नृत्य कला की शिक्षा के लिए नाट्याचार्य गणदास के पास रखा था।

5.1.5 <u>मनोवैज्ञानिक समस्या</u> :-

मनोविज्ञान में मानसिक वृत्ति का अध्ययन किया जाता है। मन की इच्छा-आकांक्षा, मनुष्य स्वभाव और मन में उठनेवाले विचारों का विस्तृत विवेचन किया जाता है। नारी स्वभाव में सहनशिलता, संवेदनशिलता, भावुकता आदि प्रवृत्तियाँ दिखाई देती हैं। और इसी वृत्ति के कारण कभी-कभी नारी को मानसिक कुंठा जैसी समस्या का सामना करना पड़ता है।

(अ) <u>मानसिक कुंठा</u> :-

मनुष्य अपने जीवन के एक ही वातावरण, एक ही जीवन व्यवहार से

ऊब जाता है, साथ ही परिवार के विषम वातावरण से मन ऊब जाता है और इस घुटन भरे जीवन को मन में ही दबाया जाता है, जिससे मनुष्य मानसिक कुंठा इस समस्या की शिकार बन जाता है। उसी के अंतरंग रुप को युगीन उपन्यासकार मुखरित करने का प्रयास करते हैं।

'राई और पर्वत' में विद्या एक आदर्श, पवित्र विधवा के रुप में चित्रित हुई है जिसे एक छोटी सी भूल के कारण कलंकित माना जाता है, परंतु विद्या को कलंकित बनाने के पीछे विद्या की माँ, फूलवती का प्रमुख हाथ था। साथ ही समाज भी उसे घृणित मानता है। अपने इस अपमान का विरोध विद्या करना चाहती है, परंतु गांववालों तथा पिता के सामने रामभरोसे के हाथ से रबड़ी चखते समय पकड़ी जाने के कारण विद्या का विद्रोह मन में दबा-सा रहता है। इससे विद्या का मन कुंठित बन जाता है, वह मन-ही-मन घुटती रहती है। विद्या न समाज का विरोध कर सकती है न माता-पिता का विरोध कर सकती है। कलंकिता, खूनी नाम के लांछन को मन-ही-मन में सहना पड़ता है। अपनी माँ के अनैतिक संबंध, चाचा की हत्या, अपने चरित्र पर लगाए गए झूठे इल्जामों का विरोध नहीं कर सकती और मन में ही प्रतिहिंसा से जलती रहती है। विद्या, सुसंस्कारित होने के कारण वह सब कुछ सहती रहती है। परंतु अंत में मन में दबायी गयी घुटन को विद्रोह के रुप में व्यक्त करती है।

फूलवती भी अपने ऊपर लादी गई विषम परिस्थितियों को, घटनाओं को सहते हुए घुटनभरी जिंदगी बिता देती है। फूलवती का एक अधेड़ वृद्ध से विवाह, जिससे अपने प्रेमी से बिछड़ जाना, ससुराल में आते ही देवर के हाथों बलात्कार की शिकार होना आदि बातों से फूलवती अंदर-ही-अंदर घुटती रहती है। वृद्ध की पत्नी

होने के कारण वह अपने-आपको भी बुढ़िया समझने लगी थी। एक बैरागिन की तरह रहने लगी थी। किंतु मन ही मन वह हरदेव के लिए छटपटाती है। समाज तथा पति को धोखा देकर हरदेव से मिलती है। अपने संबंध को छुपाए रखने का प्रयास करती है। ऐसी घुटनभरी जिंदगी से ऊबकर वह अपने रास्ते में आए हुए कांटों को हटाने का प्रयास करती है। परंतु फूलवती को ही अपमानित होकर अपनी जिंदगी को मिटाना पड़ता है।

'पतझर' की मोहिनी भी अपने प्रेम की असफलता और विरोध की अक्षमता के कारण मन-ही-मन कुंठित तथा घुटनभरी जिंदगी बिताती है। मोहिनी न अपने प्रेम को पा सकती है और न ही किसी के सामने अपने प्रेम को व्यक्त कर सकती है। मन-ही-मन घुटती रहती है। परिणामतः वह मनोरुग्ण बन जाती है। कविता के रुप में गाकर मोहिनी अपनी मन की वेदना, घुटन को व्यक्त करती है। मोहिनी के मन की घुटन उसके पूर्व जन्म से संबध्दित है क्योंकि मोहिनी जन्म-जन्मांतर से 'प्रावर्णा', 'सुकेशी', 'रमिया' आदि रुपों में घुटनभरी जिंदगी बिताती आई है। समाज तथा पुरुष के अधिकारों के नीचे दबाई गई और अन्याय को सहती आई है। लेकिन जन्म-जन्मांतर की घुटन को मोहिनी डॉ.सक्सेना की सहायता से, प्रेरणा से मिटा देती है, उससे मुक्त होती है।

'कल्पना' में नीला, डॉक्टर पति मिलने के कारण खुश थी, परंतु धीरे-धीरे नीला पति के स्वभाव-गुणों के कारण कुंठित बन जाती है। नीला का पति, नीला को एक पराई औरत समझता था। किंतु नीला भारतीय और संस्कारित होने के कारण अपने पति के व्यवहार का विरोध नहीं करती। अपने पति और उसकी प्रेमिका के खुले व्यवहार का विरोध नहीं करती। अपने पति और उसकी प्रेमिका के खुले

व्यवहार को चुपचाप देखती है, सहती है। जब डॉक्टर के कंधे पर निर्मला सिर रख देती है तो नीला का खून खौल उठता है। अपने पति और निर्मला की बातें सुनकर नीला मन-ही-मन तिलमिला उठती है। परंतु उनका विरोध करने के बावजूद नीला, दोनों को घर में बुलाती है और अपने मन की मुराद को पूरी करने की इजाजत देती है अपने मन की कुंठा को विद्रोही रुप में नीला प्रकट करती है, जैसे - "जो पुरुष मुझे उपेक्षित करके तुम्हें ला सकता है, उसका पूरा भरोसा मत करो। संभव है वह समय पर तुम्हें छोड़ दें।"[21]

निर्मला भी अपने प्रेमी से बिछड़ने के कारण कुंठित सी रहने लगती है। निर्मला का विवाह एक वकील से होता है, किंतु वह वकील को अपना पति नहीं मानती। धर्म से तो वकील, निर्मला का पति है, परंतु पत्नी जैसा व्यवहार निर्मला डॉक्टर के साथ ही करती है। निर्मला मन-ही-मन घुटती रहती है। वह डॉक्टरन से कहती है, "मेरा दिल इसे नहीं सह सकता,

आखिर क्या?

कि तुम अपनी इस औरत के साथ......।

कहीं तुम अपनी इस औरत

के पीछे मुझे भूल न जाओ।"[22] किंतु निर्मला की यह घुटन उसका अंत ही कर देती है। समाज के डर से वह वकील से विवाह कर एक दबी-दबाई जिंदगी बिता रही थी, जो नीला के त्याग के सामने हार कर निर्मला जहर खाकर अपनी घुटन भरी जिंदगी को हमेशा के लिए मिटा देती है।

5.1.6 नारी शिक्षा की समस्या :-

शिक्षा के कारण नारी को स्वावलंबी जीवन बिताने, अपनी स्वतंत्रता हासिल करने में मदद मिलती है। शिक्षित नारी को अपने स्वावलंबी जीवन के कारण किसी दूसरों पर निर्भर नहीं रहना पड़ता। राघव जी ने अपने उपन्यासों में शिक्षित नारियों के साथ ही अशिक्षित नारी का भी प्रभावी चित्रण किया है, जो मन में पढ़ने-लिखने और शिक्षिका बनने की इच्छा रखती है।

'राई और पर्वत' में विद्या को एक बोझ समझकर उसका बाल विवाह करा दिया जाता है। विवाह के चार वर्ष बाद ही उसे विधवा होना पड़ता है। ससुरालवाले और अपने माँ-बाप का भी विद्या को सहारा नहीं मिलता। अतः वे विद्या का पुनर्विवाह करना चाहते हैं। किंतु विद्या पुनर्विवाह का विरोध कर अपने वैधव्य जीवन में सांतवी कक्षा तक पढ़-लिखकर लडकियों की पाठशाला में मास्टरनी बनना चाहती है। माँ, फूलवती विद्या का विरोध करती है जैसे- फूलवती मास्टरनी पेशे के खिलाफ विद्या का मन अपवित्र बातों से भड़काती है। इसी कारण विद्या भी अपनी मन से मास्टरनी बनने के ख्वाब छोड़ देती है और इसी अनपढ़ता के कारण विद्या को जीवन में दुख भुगतने पड़ते हैं।

'पतझर' में मोहिनी एम्.ए.पास है, किंतु यौनाकर्षण के कारण अपनी शिक्षा तथा ज्ञान को भूलकर अपने प्रेमी से बिछड़ने के गम में मनोरुग्ण बन जाती है। अपनी स्वतंत्रता को भूलकर माँ-बाप तथा समाज के दबाव में आकर दुखमय जीवन जीती है अपने अस्तित्व को भूलकर बोलना ही बंद कर देती हैं बिजली के झटकों को चुपचाप सह लेती है। उच्चशिक्षित होते हुए भी अपने मन में दबे हुए प्यार को व्यक्त करने में हिचकिचाती है। अपने-आपको एक अबला नारी समझती है

जैसे मोहिनी कहती है, "मैं नारी हूँ और नारी सदैव समाज में कुचली गई है।"[23] मोहिनी अपने प्यार के दर्द में अपने कर्तव्यों, अधिकारों को भूल जाती है। डॉ.सक्सेना से प्रेरणा पाकर मोहिनी अपने अस्तित्व, अपने कर्तव्यों को जान लेती है।

'कल्पना' में नीला भी उच्चशिक्षित है, एक डॉक्टर की पत्नी है, फिर भी अपने पति के विवाह बाह्य संबंध को एक अनपढ़ नारी के समान अन्याय सहती रहती है। अपनी इच्छा-आकांक्षा, सपनों को मन में ही दबाके रखती है। अपने मन का विद्रोह अपनी सहेली राजम के पास उगलती है, लेकिन पति को कुछ नहीं कहती। उच्चशिक्षित होते हुए भी वह पने पति से अपने अधिकार छीन लेना नहीं चाहती। अपने पति की बदनामी में ही अपनी बदनामी मानती है और पति के अवैध संबंधों को छुपाकर रखती है। जैसे – नीला का कथन है, "जिसका जैसा स्वार्थ होता है, वह वैसा ही तो करता है। अब मेरा भी कुछ स्वार्थ है। पर मुझे आपकी चिंता नहीं। इस स्त्री को चिंता है। क्योंकि तब सब कहेंगे कि मेरा पति एक पराई स्त्री से व्यभिचार करता था। उसमें जाने-अनजाने मुझ पर ही आघात होगा न? वह मैं नहीं चाहती।"[24] नीला अपनी शिक्षा का उपयोग अपने त्याग, समर्पण और समझदारी के रुप में करती है। और अंत में पति की आत्महत्या के बाद लेखक को पत्र लिखकर सलाह माँगती है। राघव जी नीला को अपना जीवन व्यस्त बनाने की सलाह देते हैं। अपने बलबुते पर स्वावलंबी, सम्मानित जीवन बिताने का संदेश देते हैं, जहाँ नीला की शिक्षा का उपयोग हो सकता है।

निर्मला, भी एक शिक्षित युवती है, जो गर्ल स्कूल में पढ़ाती है। बी.ए. कर रही है और एम्.ए. करनेवाली है। किंतु निर्मला भी प्रेम समस्या का शिकार बन अपने अस्तित्व को मिटाती है । अपने प्रेमी की विवशता तथा मजबुरी के कारण वह

अपने प्रेमी से बिछड़ जाती है । निर्मला एक वकील से विवाह करती है, परंतु विवाह के बाद भी अपने पूर्व प्रेमी को भूल नहीं सकती। निर्मला अपने प्रेमी के प्रति अविश्वास दिखाती है। अपने प्रेमी को मिलने आधी रात में भी बिना घबराते आती है। निर्मला साशंकित है कि, कहीं अपना प्रेमी अपनी पत्नी के कारण अपने को भूल न जाए। इसलिए निर्मला अपने प्रेम को नीला के सामने व्यक्त करती है और डॉक्टर से अलग होना नहीं चाहती। उच्च शिक्षित होते हुए भी यौनाकर्षण के कारण निर्मला अपमानित और लज्जित अवस्था में एक होटल में जहर खाकर अपने प्रेमी के साथ आत्महत्या करती है। नीला की सहेली, राजम भी निर्मला से घृणा करती है। राजम का मत है कि अब तो निर्मला को बी.ए. का इम्तिहान नहीं, ''कायदे से तो पुत्र रत्न देना चाहिए।''[25] शिक्षित होते हुए भी निर्मला ने दो घरों को उजाड़ दिया था। एक तो नीला का घर बरबाद हो गया था और वकील को भी धोखा दिया था।

अशिक्षा के कारण नारी अपना जीवन सँवार नहीं सकती जैसे – 'विद्या का जीवन'। तो कहीं नारी उच्च शिक्षित होते हुए भी अपनी शिक्षा का उपयोग अपने जीवन के अधःपतन के लिए करती है। इसीलिए राघव जी ने अपने 'राई और पर्वत', 'पतझर', और 'कल्पना' उपन्यासों के अंत में नारी को स्वतंत्र एवं मुक्त किया है और मुक्त होने का संदेश भी दिया है।

5.1.7 नारी मुक्ति की समस्या :-

समाज में नारी और पुरुष में समानता लाने के लिए राघव जी नारी जागरण की आवश्यकता मानते हैं। व्यक्ति स्वतंत्रता के साथ-साथ राघव जी नारी स्वतंत्रता और समानाधिकार के समर्थक हैं। उन्होंने अपने उपन्यासों में नारी के संघठन और एकाधिकार की माँग के लिए प्रेरित किया है। वे नारी को एक प्रेरक शक्ति

और सबला मानते हैं। स्त्री के पातिव्रत्य को जननीत्व का गौरव मानते हैं।

'राई और पर्वत' में विद्या तथा फूलवती को समाज और पुरुष द्वारा अन्याय, अत्याचार को सहन करना पड़ता है। वे दोनों अपनी-अपनी बौद्धिक क्षमता से, पुरुष प्रधान समाज का विरोध करती हुई अपनी जिंदगी बिता देती है। फूलवती का जीवन अवैचारिकता को प्रदर्शित करता है, जो समाज में सम्मान प्राप्त करती है और विद्या एक आदर्श एवं पवित्र नारी होते हुए उसका अध:पतन हो जाता है, किंतु फिर भी वह अपनी पवित्रता को बचाए रखते हुए, सारी कठिनाइयों को सहते हुए अंत में समाज के प्रति विद्रोह कर उठती है। अपना अधिकार छीन लेती है। अपनी असहायता में अपने को सहायता करनेवाले रामभरोसे को अपनाकर समाज के बंधन को तोड़ देती है जैसे – "रात बीत गई रामभरोसे। उजाला हो गया......तू मेरा है....मैं तेरी हूँ....अब मुझे कोई डर नहीं......सुनता है ना।"[26]

'पतझर' में मोहिनी के पूर्व जन्म से संबंधित वर्तमान जीवन को चित्रित किया है। मोहिनी जन्म-जन्मांतर से पुरुष द्वारा, समाज द्वारा शोषिता के रुप में अन्याय को सहन करती आई है। परंतु आधुनिक तथा वर्तमान जीवन में वह डॉ. सक्सेना की सहायता से अपना अधिकार एवं स्वतंत्रता हासिल कर लेती है समाज तथा माता-पिता की मान-मर्यादा का पालन करते-करते वह अपने जीवनसाथी के चुनाव के लिए माता-पिता की पसंद का विरोध करती है। पुरानी रुढ़ि-प्रथा से मुक्त होकर मोहिनी अपनी इच्छा से जीवनसाथी का चुनाव करती है। मोहिनी के चुनाव से उसकी स्वतंत्रता और एकात्मकता प्रदर्शित होती है।

'कल्पना' में नीला के माध्यम से युगों-युगों से नारी को शोषित तथा पुरुष एवं समाज के अधिकारों के नीचे दबायी, अन्याय तथा अत्याचार को सहती आई

दिखाया है। प्राचीन युग, मध्य युग और आधुनिक युग में नारी, पुरुष और परिवार के लिए आत्मसमर्पण कर अपने अस्तित्व को भूल गई है। इसी कारण उसे अपने जीवन में दुख-ही-दुख भुगतना पड़ता है। इसी नारी के अस्तित्व को जगाने की कोशिश राघव जी ने नारी की वास्तविक स्थिति का परिचय देते हुए की है। नारी को पुरुष अपनी गुलाम मानते हैं। राघव जी ने नारी को आलसी और कामचोर कहा है, क्योंकि नारी पुरुष पर निर्भर रहती है। मेहनत और मुसीबत से बचने के लिए नारी ने अपनी जिम्मेदारियों को छोड़ा है। नारी आराम के लिए कमा-कमाए धन को भोगने के लिए पुरुष की गुलाम बन गयी है और पुरुष ने भी स्वामिनी का पद देकर नारी को सम्मान दिया है, किंतु स्वामिनी पद से पुरुष ने नारी को बेड़ियों में जकड़ रखा है। अब नारी पुरुष से मुक्त होना चाहती है जैसे, "क्या करूँ, मैं पुरुष का खिलौना बन गई हूँ। पुरुष मुझ पर अत्याचार करता है। मैं स्वतंत्र होना चाहती हूँ। मैं उसके लिए सब कुछ छोड़कर आती हूँ। उसे सब कुछ देती हूँ। पर मुझे वह सुख नहीं देता।"[27]

राघव जी ने अपने उपन्यास में नारी को मुक्त होने, स्वतंत्र होने का संदेश दिया है।

5.5.2 धार्मिक समस्या :-

हमारे समाज में धर्म के नाम पर मनुष्य का शोषण किया जाता है, जिसका कारण व्यक्तिगत स्वार्थ, अशिक्षा, अंधश्रद्धा आदि है। समाज में धर्म के स्थान पर अधर्म का विकास हो रहा है। धर्म के नाम पर कर्मकांड, बाह्याडंबर, अंधविश्वास को बढ़ावा मिल रहा है जैसे - देवदासी प्रथा, बलिप्रथा, सती प्रथा, अंधविश्वास आदि समस्याएँ मनुष्य और समाज के लिए विघातक बन सकती है।

(अ) सती प्रथा :-

प्राचीन काल में सती प्रथा प्रचलित थी। धीरे-धीरे इस प्रथा का विनाश हो रहा है। आधुनिक युग में इस प्रथा के पीछे अज्ञान तथा अंधविश्वास ही कारण माना जाता है। 'राई और पर्वत' में भी सती का चित्रण हुआ है, लेकिन इस उपन्यास में फूलवती जो सती हो गई है वह अंतर्द्वंद्व तथा अपमान के डर से सती जाती है। फूलवती हरदेव से प्रेम करती है। वह अपने पति की आँखों में धूल झोंककर हरदेव से मिलती है। समाज के सामने एक पतिव्रता का आदर्श रखती है, किंतु इसके पीछे पतिव्रता का ढोंग यह कारण है। अपने स्वार्थ के लिए विद्या को बदनाम करती है, जिससे विद्या में अपनी माँ के प्रति प्रतिहिंसा सी जग जाती है। अपनी माँ के अवैद्य संबंध का विद्या विरोध करती है। माँ-बेटी में झगड़े शुरु हो जाते हैं जिससे फूलवती के अवैद्य संबंधों का राज खुल जाता है। और फूलवती अपमानित होकर समाज में स्थित अपने पतिव्रता रुप को कायम रखने के लिए पति के साथ सती जाना चाहती है। रामभरोसे और विद्या प्रतिहिंसा से फूलवती को सती जाने के लिए प्रेरित करते हैं। तभी फूलवती अपने बाल नोचती है और अपने सती होने का ऐलान करती है, "रामचरन । मैं सती होऊँगी। मैं जिंदा जलूँगी। इन पति ने मुझे सदा सुख दिया मैं इनकी सेवा नहीं कर सकी। इस पाप के लिए मुझे भवानी ने आज्ञा दी है कि मैं इनके साथ जिंदा जलकर मर जाऊँ।"[28] गांववाले भी फूलवती के ऐलान से सती जाने की तैयारी करते हैं। फूलवती महादेव जी के मंदिर में जाकर पाव-भर भांग का पिंडा पी गई थी। रासलीलावाले डंड़े, बैण्ड, नगाड़े बजाते हुए 'सती की जय', 'भवानी माता की जय' आदि का नारा लगाते हैं और फूलवती हँसती, रोती, चिल्लाती, गाती, झूमते-झूमते कहती थी, "तुम जान गए सब.... तुम जान गए सब.....

अब पाप न छिपेगा.... भवानी का आदेश है...... होय री मैया भवानी.......आग फूल हो जाए, जो तेरी महर हो जाए....।"[29]

गांववाले जय सती, जय भवानी का नारा लगाते हुए जुलूस निकालते हैं। रासलीला वाले बैण्ड्-बासुरी बजाते हुए फूलवती चिता पर चढ़ जाती है। आग लगते ही फूलवती उछलती है, चिल्लाती है, "हाय मरी रे....।" जैसे फूलवती जलना नहीं चाहती थी। परंतु गांव के कुछ लोग घी की धारें सती की चिता पर गिराते हैं ताकि वह चिता से बाहर निकल न भागे। गांववालों को लगता है, "अगर कहीं चिता को आग लगते ही यह फूलवती भागी तो नाक कट जाएगी। सदा-सदा के लिए सिर झुक जाएगा।"[30] गांव के लोग घी के कनस्तर लिए चिता के पास ही बैठे थे कि फूलवती बाहर न आने पाए। इस प्रकार फूलवती अंतर्द्वंद्व के कारण तथा पतिव्रता का पोल गांववालों के सामने खुल न जाए इस डर से, अपमान से पति के साथ चिता पर सती जाती है। और गांववालों ने भी फूलवती को जैसे जबरदस्ती से जलाया था।

(ब) <u>अंधविश्वास</u> :-

समाज में मानव विकास के साथ ही लोगों में अंधविश्वास की वृद्धि हो रही है। आज भी देहातों में भी भूत-प्रेत, जादू-टोना, बलि देना, विधवा को अशुभ मानना आदि पर विश्वास रखा जाता है। लेकिन आधुनिक युग में ऐसी अनेक संस्थाएँ स्थापित हो गई हैं, जो अंधविश्वास को मिटाने का प्रयास कर रही हैं और ज्यादातर संस्थाएँ कामयाब भी हो रही हैं। विशेषतः सती प्रथा के बारे में जिसका वर्णन 'राई और पर्वत' में हुआ है।

विद्या की माँ, फूलवती जब सती जाती है, तो गांववाले उसके लिए बांसुरी, बैण्ड् के साथ 'जय सती फूलवती' का नारा लगाते हुए जुलूस निकालते हैं। श्रद्धालु स्त्रियों ने सिंदूर और कुंकुम-अक्षता का थाल थमा लिया था। फूलवती के दोनों हाथ सिंदूर से रंगे थे, माथे पर सिन्दूर लगा था। पीछे लाश फूल-मालाओं से ढकी थी और जय-जयकारों के बीच फूलवती चल रही थी, तो गांव के लोग उसके पांव छूने के लिए भागते हैं, औरतें, सती की छाया से बच्चे निकालती है। फूलवती जब चिता पर चढ़ती है और आग लगाई जाती है तो लोग पूछते हैं, "माता.... अगली फसल कैसी होगी? कोई पूछता है....'माता.....गाम में कभी रोग न आवे..... आसिरवाद दे जा।'"[31] जो सती जाती है, उसे देवता का रुप माना जाता है। फूलवती भी सती जाने के पीछे भवानी का आदेश मानती है। सरकारी सिपाही भी कहता है, "सती की आह बड़ी होती है। जो पलट पड़ी तो बंस नास कर देगी।"[32] सती का रुप भवानी का क्रोध समझा जाता है। जब कि फूलवती अपमान के भय से सती जाती है, और आग की लपटें उसे जला देती हैं, जिससे फूलवती को दर्द होता है। गांववाले उससे आशिर्वाद माँगते हैं। सती का मेला लगाया जाता है। उन्हें लगता है कि सती की पूजा करने से हमारे गांव को आबाद रखेगी। गांव के संकटों को दूर करेगी।

पंड़ित सुखदेव के लड़के को जमनाजी के किनारे मृत पंड़ित गिरिधर साफ धोती पहने और फूलवती सफेद साड़ी पहने दिखाई देते हैं। सुखदेव के लड़के ने उनसे पूजा करवाई थी। साथ ही दरोगा जैसे शिक्षित लोग भी ऐसी बातों पर विश्वास रखते हैं। जैसे-रामचरन दरोगा को बताता है कि अपने-आप चिता में आग प्रकट हुई तो दरोगा को भी विश्वास होता है, साथ ही फूलवती का सती जाना

भवानी की आज्ञा ही मानी जाती है।

गांववाले विद्या को अशुभ मानते हैं, क्योंकि वह विधवा है। विधवा को खुलेआम तथा स्वतंत्रता से घूमने-फिरने का अधिकार नहीं होता। विद्या गाना गुनगुनाती हुई बाजरे के खेत से जा रही थी तभी उसका मन कहता है, "कोई सुन न ले। वह विधवा है। क्या कहेगा कोई।"[33] ऐसे अंधविश्वास लोगों तथा समाज को हानि पहुँचाते हैं।

5.2.3 <u>आर्थिक समस्या</u> :-

समाज में मध्यवर्गीय और निम्न-मध्य वर्गीय परिवार में व्यक्ति को अपनी इच्छानुसार जीवन बिताने के बीच कभी-कभी अर्थाभाव या आर्थिक समस्या उत्पन्न होती है। मनुष्य को अर्थाभाव के कारण घुटन भरा जीवन बिताना पड़ता है। ऐसे परिवार में लोग कभी-कभी पैसों के लालच में बेटी का विवाह वृद्ध के साथ करने में भी नहीं हिचकिचाते।

'राई और पर्वत' में फूलवती का विवाह पैसों के लालच से किया जाता है। फूलवती और हरदेव भी अर्थाभाव के कारण समाज का विरोध नहीं कर सके। न तो वे चाचा का विरोध करते हैं, और न वे कुछ कमाते थे। अतः उन्हें एक-दूसरे से अलग होना पड़ता है।

विधवा 'विद्या' को भी अर्थाभाव के कारण एक लाचार तथा घुटन भरा जीवन जीना पड़ता है। विद्या, पढ़-लिखकर शिक्षिका बनना चाहती है, अपने पैरों पर खड़ी होना चाहती है। परंतु वह अपनी इच्छा-आकांक्षा को पूरा नहीं कर सकती। अपने कलंकित जीवन में उसे भूखा रहना पड़ता है। एक असहाय जीवन बिताना

पड़ता है। अकेला रामभरोसे ही विद्या के खाने-पीने का खयाल रखता है, विद्या की मदद करता है, अन्यथा विद्या तो भूखे ही मर जाती।

'पतझर' में मोहिनी और जगन्नाथ पढ़े-लिखे एवं शिक्षित होते हुए भी मजबूरी के साथ-साथ अर्थाभाव के कारण एक-दूसरे को पा नहीं सकते, क्योंकि न ही जगन्नाथ कुछ कमाता है और न ही मोहिनी कमाती है। डॉ.सक्सेना उन्हें अपने कर्तव्य, अपने अस्तित्व का एहसास दिलाते हैं, जिससे दोनों अपनी गलतियों को महसूस करते हैं।

निष्कर्ष :-

डॉ.रांगेय राघव जी ने अपने 'राई और पर्वत', 'पतझर' तथा 'कल्पना' सामाजिक उपन्यासों में समाज की वास्तविक और यथार्थ स्थिति को चित्रित किया है। राघव जी ने नारी की स्थिति, नारी जीवन और नारी समस्याओं का सूक्ष्म निरीक्षण और अध्ययन कर अपने उपन्यासों में स्पष्ट रुप से उसका चित्रण किया है। उनके उपन्यासों की नारी अपने जीवन में आनेवाली समस्याओं से जूझती हुई अंत में अपना विद्रोही रुप प्रकट करती है और सामाजिक बंधनों से मुक्त हो जाती है साथ ही नारी समस्याओं के साथ सामाजिक कुरीतियों, विडंबनाओं तथा कुरुपताओं पर गहरा प्रहार किया है। ताकि नारी के प्रति समाज का दृष्टिकोन् बदल जाए। नारी को समाज में सम्मान और समानाधिकार प्राप्त हो जाए । आलोच्य उपन्यास ग्रामीण तथा शहरी जीवन को प्रस्तुत करते हैं । इसी कारण तत्कालीन युगीन परिस्थितियों के आधार पर इनमें नारी समस्याएँ चित्रित हुई हैं ।

राघव जी ने 'राई और पर्वत', 'पतझर' तथा 'कल्पना' इन तीनों

उपन्यासों में मध्यवर्गीय नारी का चित्रण किया है। प्रस्तुत उपन्यासों की नारी को अपने जीवन में व्यक्तिगत, पारिवारिक तथा सामाजिक आदि विविध समस्याओं से, संघर्ष के उतार-चढ़ावों से गुजरना पड़ता है। उन्होंने अपने नारी पात्रों के माध्यम से समस्त नारी जाति को समाज के बंधन से एवं स्वतंत्र होने का संदेश दिया है। राघव जी के प्रस्तुत उपन्यासों में नारी की सामाजिक, धार्मिक, आर्थिक समस्याएँ चित्रित हुई हैं । सामाजिक समस्याओं में विवाह विषयक समस्या, विवाहोत्तर प्रेम समस्या, काम तथा यौन संबंधी समस्या, पारिवारिक समस्या, मनोवैज्ञानिक समस्या आदि का विस्तृत विवेचन हुआ है।

'राई और पर्वत' में राघव जी ने विद्या को एक आदर्श तथा पवित्र रुप में चित्रित किया है, जिसे बालविवाह का शिकार बनाया जाता है। विवाह के चार वर्ष बाद ही विद्या को विधवा जीवन को अपनाना पड़ता है। माँ 'फूलवती' अपने स्वार्थ के लिए विद्या का पुनर्विवाह करना चाहती है, जिसका विरोध विद्या करती है क्योंकि विद्या पुराने विचारोंवाली होने के कारण अपने भाग्य को माननेवाली नारी है। फूलवती वृद्ध पति के कारण अपनी वासना तृप्ति के लिए हरदेव से अवैध संबंध रखती है और अपनी बेटी को भी इस राह पर चलाना चाहती है। राघव जी ने विवाह विषयक जैसी समस्या 'पतझर' में भी दिखाई है जो मोहिनी के जीवन में आई है। मोहिनी, जगन्नाथ नामक युवक से प्रेम करती है परंतु भिन्न जाति के कारण समाज तथा परिवार की मान-मर्यादा के कारण वे मिल नहीं पाते, वे जन्म-जन्मांतर से बिछड़ते आए हैं । लेकिन डॉक्टर सक्सेना की सहायता से जाति-भेद को मिटाकर दोनों का अंतर्जातीय विवाह कर राघव जी ने राष्ट्रीय एकात्मकता की ओर निर्देश किया है।

राघव जी ने विवाहोत्तर प्रेम समस्या में पति या पत्नी के विवाह पूर्व आकर्षण के कारण विवाह के पश्चात् भी नारी के कष्टदायक जीवन को दिखाया है।

साथ ही पारिवारिक समस्या में नारी ही नारी की दुश्मन बन जाती है और अपने ही परिवार या संबंधित स्नेही सदस्य को बदनाम करती दर्शाई है। नारियाँ समाज के अन्याय, दबाव, पारिवारिक मान-मर्यादा के कारण घुटनभरी जिंदगी बिता देती है और मानसिक कुंठा जैसी मनोवैज्ञानिक समस्या की शिकार किसप्रकार बन जाती है इसका चित्रण करने में राघव जी सफल हुए है। इन समस्याओं का कारण नारी शिक्षा का अभाव तथा नारी की पराधीनता ही है। उन्होंने अपने उपन्यासों में सामाजिक और पारिवारिक बंधनों जकड़ी हुई, अन्याय, अत्याचार को सहती हुई नारी का चित्रण किया है और उपन्यासों के अंत में नारी का मुक्त रुप दिखाया है । साथ ही 'कल्पना' उपन्यास में नीला रुपी नारी के माध्यम से समस्त नारी-जाति को अपने बलबूते पर, स्वाभिमान के साथ जीवन बिताने, मुक्त एवं स्वतंत्र होने का संदेश दिया है ।

राघव जी ने नारी का सती जाना या समाज में प्रचलित अंधविश्वास का चित्रण कर धार्मिक समस्या की ओर समाज का ध्यान आकर्षित किया है । उन्होंने आदर्श और सच्ची नारियों का अंत सुखद दिखाया है और फूलवती जैसी कुवृत्ति की नारी का अंत दुखद दिखाया है। इससे समाज में प्रचलित दुर्व्यवहार, भ्रष्ट वातावरण, कुविचारों की ओर राघव जी ने निर्देश किया है और नारियों को स्वावलंबी और सम्मानित जीवन बिताने का संदेश दिया है। इन नारी समस्याओं के पीछे नारी की दुर्बलता, असहायता, अशिक्षा, पराधीनता, अर्थाभाव, सुसंस्कृत तथा सहनशील मन, मजबुरी आदि कारण है, जिनकी वजह से नारी को इन समस्याओं से गुजरना पड़ा है। राघव जी ने इन समस्याओं को चित्रित कर ऐसी कुप्रवृत्तियों, बाह्यार्डबरों के प्रति

अपना कड़ा विरोध दर्शाया है और ऐसी समस्याओं को नष्ट करना ही इनके उपन्यासों का उद्देश्य रहा है ।

: संदर्भ सूची :

(1) रांगेय राघव, राई और पर्वत, पृ.50

(2) वही, पृ.52

(3) वही, पृ.79

(4) वही, पतझर, पृ.59

(5) वही, कल्पना, पृ.33

(6) रांगेय राघव, राई और पर्वत, पृ.79

(7) वही, पतझर, पृ.66

(8) वही, कल्पना, पृ.32

(9) वही, राई और पर्वत, पृ.177

(10) वही, पृ.72,73

(11) वही, पृ.87

(12) वही, राई और पर्वत, पृ.51

(13) वही, पृ.51

(14) वही, पृ.84

(15) वही, पृ.134

(16) डॉ.अर्जुन चव्हाण, राजेंद्र यादव के उपन्यासों में मध्यवर्गीय जीवन, पृ.94

(17) रांगेय राघव , राई और पर्वत, पृ.82

(18) वही, पृ.80,81

(19) वही, कल्पना, पृ.32

(20) वही, वही, पृ.91

(21) वही, कल्पना, पृ.33

(22) रांगेय राघव, कल्पना, पृ.30,31

(23) वही, पतझर, पृ.102

(24) वही, कल्पना, पृ.34

(25) वही, पृ.20

(26) वही, राई और पर्वत, पृ.181,182

(27) वही, कल्पना, पृ.107

(28) रांगेय राघव, राई और पर्वत, पृ.81

(29) वही, पृ.81,82

(30) वही, पृ.83

(31) वही, पृ.84

(32) वही, पृ.82

(33) वही, पृ.65

****